शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
116 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

दक्षिण एशिया में रूस–चीन–पाकिस्तान त्रिकोण एवं भारतीय सुरक्षा

अशोक कुमार वर्मा
शोध छात्र (जूनियर रिसर्च फैलो), रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उ0प0, भारत ।
Email : ashokverma1671993@gmail.com

सारांश

पाकिस्तान, रूस और चीन का त्रिकोण दुनिया के मामलों में अधिक द्विपक्षीयता लाने या दुनिया में अमेरिका की हेमोनिक सकती को चुनौती देने के उद्देश्य से हो रहा है। जहाँ भारत का झुकाव अमेरिका की ओर होने से रूस, भारत के पारंपरिक सहयोगी होने के नाते, जिसने हर समय कश्मीर पर भारत के रूख को आस्वस्त किया, अब पाकिस्तान के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने के स्पष्टसंकेत दे रहा है। वहीं अमेरिका द्वारा पाकिस्तान की आतंकवादी गतिविधियों की आलोचना करने एवं भारत का समर्थन देने से पाकिस्तान, रूस और चीन के निकट जाता हुआ प्रतीत हो रहा है। जब अंतरराष्ट्रीय ट्रिब्यूनल ने दक्षिण चीन सागर पर चीन के दावे को नकार दिया तो उसने उसी विवादित सागर में युद्धाभ्यास करके उसके दावे को समर्थन किया। हाल ही में जब व्यापार युद्ध का दौर शुरू हो गया है तो अमेरिका को काउंटर करने के लिए अपनी–अपनी मुद्रा में व्यापार करने की रणनीति बना रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ भारत अपनी सुरक्षा चिंताओं को ध्यान में रखते हुए अमेरिका के साथ संबंधों को सुधार रहा है।

मुख्य शब्द–*शक्ति समीकरण, स्ट्रेटजी, विदेश नीति, कूटनीति, सुरक्षा, शीत युद्ध।*

प्रस्तावना

विश्व के अशांत क्षेत्रों मे ंदक्षिण एशिया भी हाल के वर्षों में उभर कर सामने आया है। जिसके परिणाम स्वरूप इस संपूर्ण क्षेत्र में विभिन्न महाशक्तियों एवं क्षेत्रीय प्रसार की आकांक्षा रखने वाले राज्यों का हित भी जुड़ता जा रहा है। जिसका यह परिणाम हुआ है कि इस क्षेत्र में शक्ति समीकरण, शक्ति प्रदर्शन, गुटबंदी बढ़ती जा रही है। जिसका भारत की सुरक्षा पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में प्रभाव पड़ा है। शीत युद्ध के दौरान भारत और रूस, पाकिस्तान के विरोध में थे जबकि वहीं दूसरी ओर अमेरिका एवं पाकिस्तान के मध्य संबंध निरंतर सुधर रहे थे। किंतु जब चीन एवं सोवियत संघ के मध्य विवाद ने जन्म लिया तथा दक्षिण एशिया में पाकिस्तान, अमेरिका, चीन धुरी देखने को मिली। यह भारत एवं सोवियत संघ के मध्य सुदृढ़ होते संबंधों का निरंतर विरोध करती रही हैं। यह समीकरण 1971 के बांग्लादेश मुक्ति युद्ध के दौरान स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। अफगानिस्तान युद्ध के दौरान जब पाकिस्तान ने सोवियत विरोधी मुजाहिदीन का समर्थन किया तो पाकिस्तान और सोवियत संघ के मध्य संबंध अत्यंत ही खराब

हो गए। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से ही रूस, कश्मीर, आतंकवाद परमाणु सहयोग, रक्षा, विनिर्माण आदि मुद्दों पर भारत का सामरिक समर्थन करता रहा है। रूस भारत का सबसे बड़ा रक्षा आपूर्तिकर्ता देश रहा है जिसके परिणाम स्वरूप रूस एवं पाकिस्तान के मध्य संबंध खराब होते चले गए।

अफगानिस्तान मुद्दे पर भी रूस और पाकिसतान विरोधी दलों का समर्थन करते रहे हैं। रूस, भारत के साथ मिलकर उत्तरी गठबंधन का समर्थन करता रहा, वहीं पाकिस्तान में तालिबान का समर्थन किया। लेकिन हाल के वर्षों में अब रूस एवं पाकिस्तान के मध्य दूरी कम हुई है। 2010 में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने घोषणा की थी कि अपने भारतीय मित्रों की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए रूस, पाकिस्तान के साथ किसी भी प्रकार का रक्षा सहयोग नहीं करेगा किंतु 6 वर्ष के अंदर ही रूस का व्यवहार परिवर्तित होता हुआ दिखाई दिया एवं दक्षिण एशिया में एक अलग तरह का शक्ति समीकरण उभरता हुआ प्रतीत हुआ है। जहाँ इस शक्ति समीकरण में रूस एवं पाकिस्तान करीब हो रहे हैं वहीं चीन इस शक्ति समीकरण को नेतृत्व प्रदान कर रहा है। इस समीकरण को काफी हद तक रूवरूप देने में भारत एवं अमेरिका के बीच बढ़ती नजदीकी का योगदान है।

रूस–पाकिस्तान नजदीकी में भारत–अमेरिका के बढ़ते संबंधों का योगदान –

भारत एवं अमेरिका के मध्य निरंतर व्यापार में वृद्धि रक्षा सहयोग एवं आतंकवाद के विरूद्ध सहयोग बढ़ता जा रहा है। यह दक्षिण चीन सागर में चीन से संबंधित साझा सुरक्षा चिंताओं से भी जुड़ा हुआ है। हालांकि इनके मध्य संबंधों में सबसे बड़ा परिवर्तन रक्षा क्षेत्र में सहयोग के रूप में ही दिखाई देता है। भारत एवं अमेरिका ने सैन्य उपकरण के मामले में एक दूसरे के सैन्य अड्डे का इस्तेमाल करने के लिए लॉजिस्टिक एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA) पर भी हस्ताक्षर किए हैं, एवं दोनों राष्ट्रों के मध्य संयुक्त सैन्य अभ्यास भी किए जा रहे हैं। अमेरिका ने रूस को भारत के सबसे बड़े सैन्य आपूर्तिकर्ता के रूप में भी प्रतिस्थापित किया है। हाल के वर्षों मेंदेखा गया है कि रूस द्वारा भारत मेंरक्षा बाजार खोने तथा यूक्रेन और क्रिमीया संकट के संदर्भ में पश्चिमी देशों द्वारा आर्थिक प्रतिबंध लगाए जाने के बाद से रूस अलगाव का सामना करने लगा है। जिसकी क्षतिपूर्ति हेतु पाकिस्तान से संबंध सुधारने में निरंतर लगा हुआ है। अफगानिस्तान तालिबानी समूहों को समर्थन देने के कारण पाकिस्तान को भी भारत, अफगानिस्तान, ईरान से विरोध का सामना करना पड़ रहा है। वर्तमान में पाकिस्तान, चीन के आर्थिक एवं राजनीतिक सहयोग पर सर्वाधिक निर्भर हो गया है एवं साथ ही साथ वह रूस के साथ भी संबधों को सुधारने का प्रयास कर रहा है। सीरिया गृहयुद्ध के मामले में अमेरिका और रूस के बीच बातचीत टूटने के बाद रूस, चीन से भी धीरे–धीरे जुड़ने लगा है। चीन ऐतिहासिक रूप से पाकिस्तान से सद्भाव रखता है। अमेरिका के साथ संबंधों में गिरावट आने और भारत के साथ अमेरिका के सबंधों में सुधार आने से चिंतित पाकिस्तान, चीन के साथ अपने संबंधों को और ठोस रूप देने की प्रक्रिया में आगे बढ़ा है। इसे दोनों देशों के मध्य बढ़ते सहयोग और चीन पाकिस्तान आर्थिक कॉरिडोर जैसी परियोजनाओं में देखा जा सकता है।

रूस–चीन एवं पाकिस्तानी त्रिकोण का कारण –

अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में राज्यों के मध्य बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने विभिन्न गुटों, आर्थिक क्षेत्रों का निर्माण, सामरिक साझेदारी आज बढ़ती जा रही है जिससे दक्षिण एशिया भी अछूता नहीं है। दक्षिण एशिया में चीन, रूस और पाकिस्तान के मध्य एक अलग प्रकार का गठबंधन बनता दिखाई दे रहा है जो मुख्यतः पूर्ण रूप से चीन एवं रूस संबंधों के आधार पर टिका हुआ है। दक्षिण एशियाई राष्ट्रों में खासकर भारत में अमेरिका के बढ़ते प्रभाव के कारण चीन, रूस एवं पाकिस्तान आपसी संबधों को सुधारने की कोशिश में प्रयासरत हैं जिससे कि इस संपूर्ण क्षेत्र मे अमेरिका के प्रभाव को कम किया जा सके, एवं पाकिस्तान के साथ मिलकर रूस आसानी से उच्च तकनीक वाले पश्चिमी हथियारों एवं साजो–समान को प्रतिस्थापित कर सकता है जिसके लिए वह प्रयासरत है। चीन, रूस एवं पाकिस्तान की तुलना में आर्थिक रूप से ज्यादा सशक्त है जिसके कारण चीन यहाँ पर आर्थिक निवेश करने का प्रयास कर रह है जिसके अंतर्गत ही बेल्ट एंड रोड परियोजना एवं साथ ही चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा अस्तित्व में आए। साथ ही भारत का अमेरिका की ओर झुकाव एवं अमेरिका से हथियारों की खरीद की वजह से कहीं न कहीं रूस का भी हित प्रभावित हुआ है जिसका परिणाम हुआ है कि रूस, पाकिस्तान को एक हथियारों के बाजार के रूप में देख रहा है जहाँ वह अपने हथियारों को बेच सके, जो कि रूस का पाकिस्तान से सुधारते संबंध का एक प्रमुख कारण है। वहीं दूसरी तरफ चीन द्वारा भारत को स्ट्रेटजिक एवं सामरिक रूप से घेरने के लिए पाकिस्तान एक बहुत ही अच्छा विकल्प बना हुआ है। पाकिस्तान का ग्वादर बंदरगाह चीन को दिए जाने का प्रमुख कारा है। हालांकि चीन एवं पाकिस्तान के मध्य संबंध जितने मधुर हैं उतन मधुर संबंध रूस एवं पाकिस्तान के मध्य नहीं है। कुछ लोगों की मान्यता है कि रूस एवं पाकिस्तान का संबंध उतना टिकाऊ नहीं हो सकता जितना कि भारत एवं रूस का संबंध है। क्योंकि इन दोनों देशो के बीच ठोस आर्थिक संबंध नहीं है तथा द्वीपक्षीय संबंध के लिए ठोस रणनीति का भी अभाव है तथा साथ ही रूस एवं पाकिस्तान के संबंधों का स्वरूप स्थिर भी नहीं है। वर्तमान परिवेश में दक्षिण एशिया में आतंकवाद, छोटे शस्त्रों का प्रसार, मादक पदार्थों का अवैध व्यापार आदि महत्वपूर्ण समस्या बना हुआ है जिसमें कहीं न कहीं पाकिस्तान का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है। ऐसे में पाकिस्तान का रूस एवं चीन के साथ संबंध कब तक टिकता है सोचनीय तथ्य है। क्योंकि वर्तमान परिदृश्य में लगभग सभी राष्ट्र इन समस्याओं से जूझ रहे हैं। भारत एवं अमेरिका भी विभिन्न समझौतों के तहत आतंकवाद के समाप्ति के लिए प्रतिबद्ध है। वहीं दूसरी ओर चीन एवं रूस के मध्य भी संबंध जटिल और अप्रत्यक्ष प्रतिद्वंदिता का रहा है तथा दोनों देशो के मध्य विभिन्न मुद्दों को लेकर विवाद भी रहा है। रूस अपने सुदूर पूर्व में चीन की मंशा को लेकर भी आशंकित है। चीन से होने वाला अवैध प्रवास भी रूस के लिए चिंता का विषय है। इसके अलावा मध्य एशिया पर भी दोनों देश अपना वर्चस्व स्थापित करन चाहते हैं इसको लेकर दोनों देशों के मध्य आर्थिक एवं राजनैतिक स्पर्धा चल रही है जिससे दोनों देशों के मध्य दीर्घकालिक सामरिक समीकरण बिगड़ सकता है। ऐसे में यह विचारणीय तथ्य है कि दक्षिण एशियाई राजनीति में चीन–पाक–रूस गठबंधन कितना

सफल हो पाएगा और यह भारत–अमेरिका संबंध को कितना प्रभावित कर सकता है।

भारत–रूस के बीच बढ़ती दूरी

भारत और रूस दीर्घकालिक सहयोगी रहे हैं एवं दोनों के मध्य सैन्य, उर्जा एवं अन्य क्षेत्रों में बहुत ही गहरे संबंध हैं। भारत विश्व का एक उभरता हथियार आयातक देश हैं एवं साथ ही साथ सैन्य उपकरणों का भी सबसे बड़ा बाजार है। निश्चित रूप से भारत का रूस के साथ संबंध से भारत को अत्यधिक फायदा हुआ है किन्तु हाल के वर्षों में भारतीय विदेश नीति का झुकाव अमेरिका की तरफ दिखाई देता है। अफगानिस्तान में विकास एवं स्थिरता को कायम एवं आधारभूत ढाँचे के निर्माण के लिए भारत एवं अमेरिका एक साथ कार्य कर रह हैं। भारत का यह प्रयास है कि अफगानिस्तान की धरती का प्रयोग भारत पर आतंकवादी हमलों में प्रयोग ना हो सके। इसके मद्देनजर भारत चाहता है कि पाकिस्तान का प्रभाव अफगानिस्तान में कम किया जाए। यदि रूस एवं अमेरिका के संबंधों में सुधार होता है तो यह भारत के लिए अत्यधिक ही सकारात्मक रहेगा इससे दक्षिण एशिया में भारतीय हितों को मूर्त रूप देने में सहायता मिलेगी। गोवा में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के वक्तव्य आश्वस्त तो करते हैं लेकिन जिस तरह से रूस के संबंध चीन और पाकिस्तान के साथ बढ़ते नजर आ रहे हैं उससे तो यही प्रतीत हो रहा है कि भारत को दक्षिण एशिया एवं व्यापक विश्व के परिप्रेक्ष्य में अपनी नीतियों को आगे बढ़ाने और अपनी भूमिका सुनिश्चत करने में अधिक परेशानी होगी।

भारत एवं रूस के मध्य बढ़ती इस दूरी को हाल के वर्षों में दो घटनाओं से अत्यधिक ही स्पष्ट की जा सकती हैं दिसम्बर 2016 में रूस, चीन और पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में इस्लामिक स्टेट के प्रभाव को रोकने के लिए बिना अफगानिस्तान की सहमति के तालिबानी समूहों से वार्ता की पहल की इस संबंध में रूस, चीन एवं पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय के अधिकारियों की बैठक मास्कों में कराई गई। रूस इस शांति वार्ता में अफगानिस्तान, ईरान, सहित कुछ अन्य मध्य एशियाई देशों को जोड़ना चाहता है किंतु भारत इसमें शामिल नहीं है। इसका यह निश्चित तौर पर परिणाम होगा कि अफगानिस्तान समेत मध्य एशियाई क्षेत्र में भारत की स्थिति कमजोर होगी। द्वितीय घटना के तहत रूस ने चीन पाकिस्तान आर्थिक कॉरिडोर का भी समर्थन किया जबकि इसके पहले यह इस मुद्दे पर भारत का समर्थन करता था। इतना ही नहीं उसेन यूरेशियन इकोनॉमिक प्रोजेक्ट को भी चीन पाक आर्थिक गलियारे से जुड़ने की बात की। हालांकि बाद में रूस ने इसका खंडन किया लेकिन भारत के लिए यह बड़ी समस्या है क्योंकियह गलियारा पाक अधिकृत कश्मीर गिलगित बालटिस्तान क्षेत्र से होकर जाता है।

भारत रूस के मध्य दीर्घकालीन संबंधो को ध्यान में रखते हुए सितम्बर 2016 में भारत विरोधी एवं भारतीय विदेश नीति के केन्द्र मे रहने वाले पाकिस्तान के साथ मिलकर रूस द्वारा किए गए सैन्य अभ्यास से भारतीय नीति निर्माताओं को चिंता हुई है। इस संपूर्ण घटनाक्रम से यह साबित हुआ है कि रूस की नीति निर्माण प्रक्रिया में कुछ कमी है। भारत और रूस के बीच समझ एवं समन्वय का अभाव दिखाई पड़ता है। जिसने भारत–रूस संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करने पर बाध्य कर रहा है। भारत–रूस संबंध विश्व के उन गिने–चुने संबंधों में शामिल

रहे हैं जो लंबे समय तक चले। किंतु अब यह आपसी संबंध अनिश्चय एवं संदेह के घेरे में आ गया है।

निष्कर्ष :–

रूस, भारत के लिए आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पहले था। रूस ऐसा राष्ट्र सुरक्षा परिषद में वीटो प्राप्त है। रूस अंतरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है एवं कई बार भारत के पक्ष में भी वीटो का प्रयोग किया है। सुरक्षा परिषद एवं परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह में वह भारत का समर्थन भी किया है। रूस से अच्छे संबंध के कारण ही भारत कश्मीर, चीन के साथ संबंध तथा मध्य एशिया सहित अन्य क्षेत्रों में बढ़त प्राप्त करता रहा है। वर्तमान परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए भारत को रूस के साथ संबंध बेहतर करना चाहिए जिससे कि रूस का झुकाव पाकिस्तान की ओर नहो सके तथा साथ ही साथ अमेरिका और रूस से सामंजस्य बिठाकर अपने हितों को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। चीन–पाक आर्थिक गलियारा एवं चीन–पाक गठबंधन को ध्यान में रखते हुए भारत की दक्षिण एशिया में ऐसी होनी चाहिए कि जिससे अपने राष्ट्रीय हितों को प्राप्त किया जा सके जिसमें भारत का रूस के साथ बेहतर संबंध भी आवश्यक है।

सन्दर्भ

1. अब्बासी, बुशरा अफजल 2008 *''जियोग्राफी ऑफ साउथ एशिया''*, लाहौर संग–ए–मिल पब्लिकेशन।
2. अहमद, ए 2017 *''पाक–रशिया रिलेशन एंड फ्यूचर प्रोस्पेक्ट''*, डिफेंस जनरल वॉल्यूम 20 नंबर 7 पेज **14.**
3. चंद्रा, सुरेश 2016 *''चीन–पाकिस्तान रिलेशन : एंप्लिकेशन फॉर इंडिया''*, न्यू दिल्ली वाइज बुक्स इंडिया।
4. Fingar, T. 2016 "the new grat game : China and South and Central Asia in the era of Reform". California Stanford University Press.
5. जहांगीर आसिफा, 2013 *''चेंजिंग डायनॉमिक्स ऑफ साउथ एशियन बैलेंस ऑफ पावर''*, जर्नल आफ साउथ एशियन स्टडीज वॉल्यूम 1 नम्बर 1 पेज **50–58**
6. Kumar, A. Vinod. 2016, "is Russia-China- Pakistan axis in the making?" Huffington Post India.
7. Malik, Hassan Yaser. 2012 "strategic importance of gwadar port", journal of political studies volume 19 number 2 page **57.**
8. पंत, एच, बी. जोशी 2017 ''इंडो यूएस रिलेशन अंडर मोदी :स्ट्रैटेजिक लॉजिक अंडर लाइन द एंब्रेस इंटरनेशनल अफेयर्स वॉल्यूम 93 नंबर 1 पेज **133–146**.